भारतेन्दु हरिश्चंद्र - आधुनिक हिंदी के पितामह

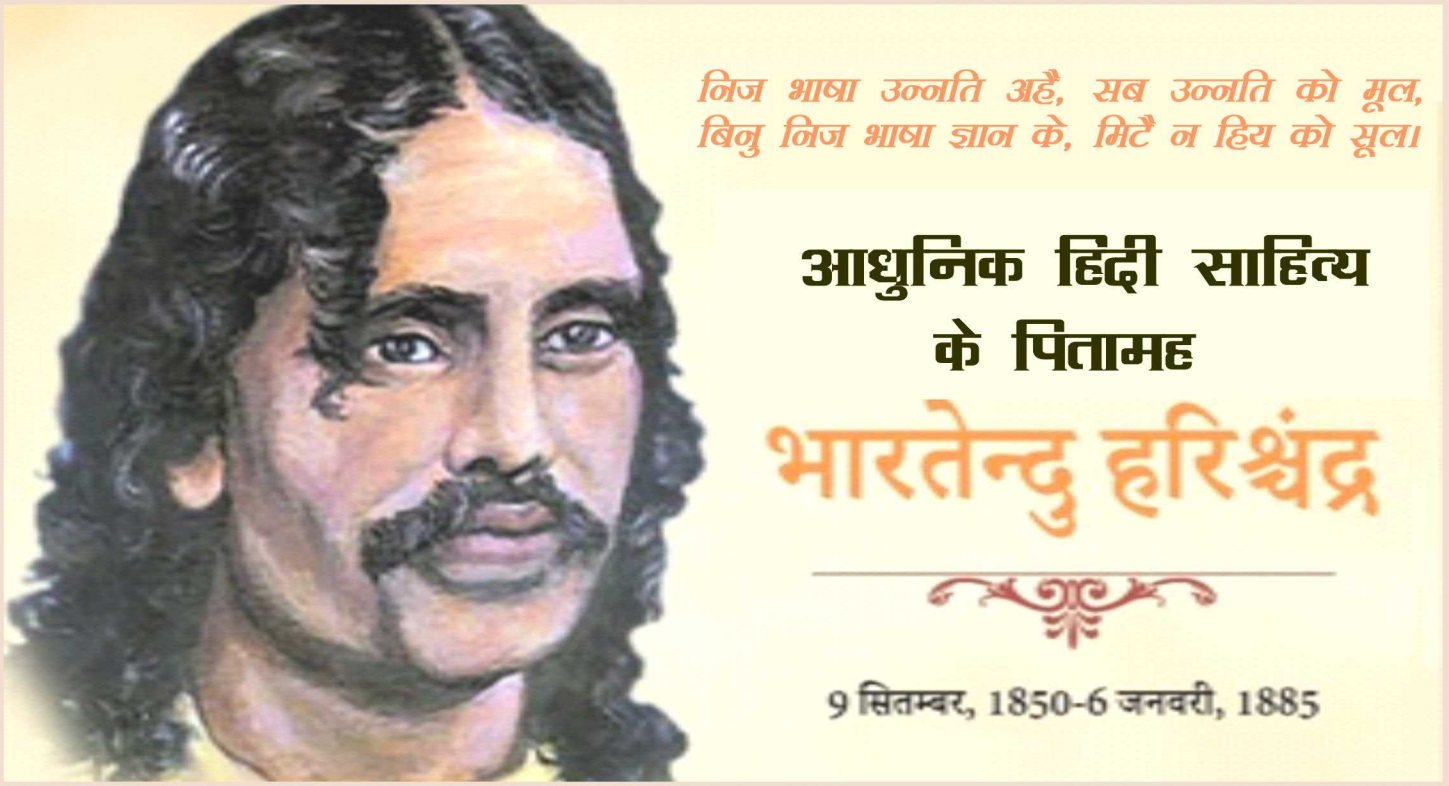

भारतेन्दु हरिश्चंद्र (9 सितम्बर 1850 – 6 जनवरी 1885) हिंदी के प्रथम आधुनिक रचनाकार थे। इनका मूल नाम हरिश्चंद्र तथा "भारतेन्दु" इनकी उपाधि है। भारतेन्दु ने न केवल नई विधाओं जैसे कि निबंध, आत्मकथा, यात्रावृतांत, नाटक, अनूदित नाटक आदि का सूत्रपात किया अपितु वे पूर्व प्रचलित साहित्यक विधाओं में भी नयापन लेकर आए। उनसे पूर्व का हिंदी साहित्य प्रेम, भक्ति और आध्यात्म तक सीमित था, उन्होंने अपने प्रयासों से हिंदी साहित्य को देश की संस्कृति से संपृक्त करते हुए पश्चिम की भौतिक–वैज्ञानिक सोच से समृद्ध किया।

भारतेन्दु के लेखन काल में भारत में जातिवाद, प्रान्तवाद, भ्रष्टाचार, अलगाववाद, छुआछूत जैसी सामाजिक समस्याएं चरम पर थी। भारतेन्दु ने इन्हीं समस्याओं को अपनी रचनाओं की विषय–वस्तु बनाया। इस प्रकार भारतेन्दु ने साहित्य में सिर्फ कपोल कल्पना का परिष्कार कर यथार्थ आधारित नवीनता का समावेश किया।

भारतेन्दु एक श्रेष्ठ पत्रकार भी थे। उन्होंने बालाबोधिनी, कविवचन सुधा और हरिश्चन्द्र पत्रिका का प्रकाशन और संपादन कर साहित्य से इतर विषयों एवं समस्याओं पर लिखा। भारतेन्दु ने इन पत्रिकाओं में ढेरों निबंध, रिपोर्ताज और आलोचनाएं लिखी।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का व्यक्तित्व और कृतित्व बहुआयामी था, उन्होंने 21 काव्यग्रंथ, 48 प्रबंध काव्य और कई मुक्तकों की रचना की। उनकी प्रमुख कृतियां निम्नलिखित हैं :

मौलिक नाटक : सत्य हरिश्चन्द्र, श्री चंद्रावली, भारत दुर्दशा, अंधेर नगरी आदि

अनूदित नाटक : कर्पूर मंजरी, मुद्राराक्षस, दुर्लभ बंधु, भारत जननी आदि

निबंध संग्रह : स्वर्ग में विचार सभा, हिंदी भाषा, कश्मीर कुसुम, जातीय संगीत आदि

काव्यकृतियां : प्रेममालिका, प्रेम माधुरी, कृष्णचरित्र, प्रेम फुलवारी, बन्दर सभा, बकरी विलाप आदि

यात्रा वृतांत : सरयूपार की यात्रा, लखनऊ

निबंध : कुछ आपबीती, कुछ जगबीती

उपन्यास : हमीर हठ, सुलोचना आदि